

Deendayal Upadhyaya

Deendayal Upadhyaya was born on September 25, 1916, in the village of Dhankia in Rajasthan. His childhood was spent in an ordinary household. His father Shri Bhagwati Prasad and mother Smt. Rampyari were religious minded who believed in the Sanatan faith. Deendayal, who was called Deena by the family, lost his father, Bhagwati Prasad, when he was less than three years old, and his mother before he was eight. He was brought up and educated at his maternal grandfather's place under difficult conditions. Deendayal drew strength from the hardships and sufferings around him and rose above his circumstances through sheer grit and determination.

He received primary education at Kota and Rajgarh. He matriculated from Sikar. He stood first in the board exam and Maharaja Kalyan Singh of Sikar, presented him with a gold medal, a monthly scholarship of Rs.10 and Rs.250 towards his books, as recognition of his merit.

Deendayal went to Pilani to study for his Intermediate. He topped the board examination in 1937 with distinction in all subjects. He was the first student of Birla College to have fared so well. G.D. Birla presented him with a gold medal, a monthly scholarship of Rs.10 and Rs.250 towards books, as recognition to his merit. He graduated with first division from Sanatan Dharma College, Kanpur in 1939 and joined St. John's College, Agra for pursuing his Master's Degree in English Literature. He passed the Provincial Services Exam, but he did not join as he was not interested in administrative services. Deendayal, therefore, left for Prayag to do his B.T. His special areas of interest were sociology and philosophy.

Deendayal was an extremely disciplined and devoted person. Though deprived of the love and affection of his parents, grandparents and of any material acquisitions, Deendayal, with his devotion to service, humility and modesty earned respect of those around him. He chose to help weaker students. He formed Zero Association in Pilani to help the students weak in studies.

While studying for his graduation in Kanpur in 1937, Deendayal came into contact with Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS) through his classmate Baluji Mahashabde. He met the RSS founder, Dr. Hedgewar there. This inspired him to devote his life for the people. He attended the 40 day summer vacation RSS camp at Nagpur where he underwent training in Sangh Education (OTC) in 1939 and 1942. After completing his education and second-year training in the RSS Education Wing, Pandit Deendayal Upadhyaya became a life-long pracharak of the Sangh. He entered politics through the Rashtriya Swayamsevak Sangh, became the General Secretary of the Bharatiya Jan Sangh, and later its President. His life was thus an embodiment of thorough political thought process.

Deendayal Upadhyaya was the author of "Samrat Chandragupt" which appealed to youngsters as a historical novel with its own distinct literary flavor. "Jagadguru

Shankracharya" was his second novel. His objective was to inspire the youth to look back to the country's glorious past, take pride in it and dedicate their lives to the revival of that ancient glory. 'Why undivided India' was written at a time when Deendayal Upadhyaya himself was preparing to enter politics.

Deendayal was a deep and original thinker. In the field of politics and economics, he was pragmatic and down to earth. He visualized for India a decentralized polity and self-reliant economy with the village as its base. He was open to the use of modern technology but wanted it to be adapted to suit Indian requirements.

He placed the nation's interests above everything else. The background of Integrated Humanism is the harmonization of Indian and Western thoughts. According to him man should be at the centre of our entire system. The system in which there is a mediocre development of a man's body and mind, the soul is incomplete; it creates only a man motivated by cunningness and self-interest, not a complete human being, whereas emphasis should be on the development of the "Complete Man, who can represent the various harmonized strands of thought and culture.

Deendayal Upadhyaya started a monthly magazine "Rashtra Dharma", a weekly 'Panchajanya', and a daily 'Swadesh'. In 1951, when Dr. Syama Prasad Mookerjee founded the Bhartiya Jana Sangh, Deendayal became the first General Secretary of its U.P. branch. He was also chosen as All India General Secretary.

After Dr. Mookerjee's death in 1953, the entire burden of nurturing the organization and building it up as a nation-wide movement fell on the young shoulders of Deendayal. For 15 long years he remained the party's General Secretary. He raised a band of dedicated workers imbued with idealism and provided the entire ideological framework of the party. The final triumph of his statesmanship and vision was the historic session of the Party in 1967. Pandit Deendayal Upadhyaya was active in India's political life from 1937 to 1968. On February 11, 1968 Deendayal Upadhyaya was found dead in the early hours near the Mughalsarai station while traveling in a train.

Politics was a means, not the end, for him. It was a journey not destination. He wished to spiritualize politics. He was inspired by India's glorious past and wanted to build a brighter future for the country. He had a dream of making India into a prosperous modern nation. He lived and strived forwards these goals.

Department of Posts is pleased to release a Commemorative Postage Stamp on Deendayal Upadhyaya.

Credits:-

Text : Based on the material received from proponent
Stamp / FDC / Brochure : Smt. Alka Sharma
Cancellation Cachet

भारतीय डाक विभाग DEPARTMENT OF POSTS INDIA



दीनदयाल उपाध्याय
DEENDAYAL UPADHYAYA

विवरणिका
BROCHURE

दीनदयाल उपाध्याय

दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितम्बर, 1916 को राजस्थान के धनकिया नामक गांव में हुआ। उनका बचपन साधारण परिवार में बीता। उनके पिता, श्री भगवती प्रसाद और माता, श्रीमती रामप्यारी धार्मिक प्रवृत्ति के थे, जो सनातन धर्म में आस्था रखते थे। पं. दीनदयाल को परिवार के लोग प्यार से दीना कहकर पुकारते थे। वे अभी तीन वर्ष के भी नहीं थे, जब उनके पिता, भगवती प्रसाद का निधन हो गया। आठ वर्ष की आयु में उनकी माता का भी स्वर्गवास हो गया। उनका लालन-पालन एवं शिक्षण, कठिन परिस्थितियों में उनके नाना के यहां हुआ। पंडित दीनदयाल ने कठिन परिस्थितियों और अभावग्रस्त जीवन को अपनी ताकत बना लिया और धैर्य और साहस के बल पर अपने राह की हर कठिनाई पर विजय पाई।

दीनदयाल उपाध्याय की प्रारंभिक शिक्षा कोटा और राजगढ़ में हुई। उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा सीकर से उत्तीर्ण की। बोर्ड परीक्षा में उन्होंने प्रथम स्थान प्राप्त किया। सीकर के महाराजा कल्याण सिंह ने उनकी विलक्षण प्रतिभा का सम्मान करते हुए स्वर्ण पदक, 10/- रु. की मासिक छात्रवृत्ति और पुस्तकों के लिए 250/- रु. पुरस्कार स्वरूप दिए।

पंडित दीनदयाल इंटरमीडिएट की शिक्षा प्राप्त करने पिलानी गए। वर्ष 1937 में (प्रतिभा का परिचय) उन्होंने सभी विषयों में विशिष्ट श्रेणी के अंक प्राप्त करते हुए बोर्ड परीक्षा में सर्वोच्च स्थान पाया। वे बिड़ला कॉलेज के पहले छात्र थे, जिन्होंने ऐसा उत्तम प्रदर्शन किया। इस उपलब्धि हेतु, श्री जी.डी. बिड़ला ने उन्हें स्वर्ण पदक, 10/- रु. की मासिक छात्रवृत्ति तथा पुस्तकों के लिए 250/- रु. नकद पुरस्कार राशि देकर सम्मानित किया। वर्ष 1939 में कानपुर के सनातन धर्म कॉलेज से प्रथम डिवीजन में स्नातक की डिग्री प्राप्त कर पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर की डिग्री हेतु आगरा के सेंट जॉन कॉलेज में प्रवेश लिया। उन्होंने प्रांतीय सिविल सेवा परीक्षा भी उत्तीर्ण की, परंतु प्रशासनिक सेवा में रुचि नहीं होने के कारण उन्होंने कार्यभार ग्रहण नहीं किया। तत्पश्चात, वे बी.टी. की शिक्षा ग्रहण करने हेतु प्रयाग चले गए। समाजशास्त्र और दर्शनशास्त्र विषयों में उनकी विशेष रुचि थी।

पंडित दीनदयाल जी अत्यंत अनुशासित तथा कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति थे। यद्यपि, वे माता-पिता और दादा-दादी के स्नेह और भौतिक सुख-सुविधाओं से वंचित रहे, परंतु अपने समर्पण भाव, सादगी, विनम्र स्वभाव के कारण उन्हें सभी से सम्मान मिला। उन्होंने पढ़ाई में कमजोर छात्रों की मदद करने का मार्ग चुना। कमजोर बच्चों की मदद के लिए उन्होंने पिलानी में जीरो एसोसिएशन की शुरुआत की।

वर्ष 1937 में कानपुर से स्नातक की शिक्षा ग्रहण करते समय अपने सहपाठी, बालूजी महाशब्दे के माध्यम से वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से परिचित हुए। यहां उनकी भेंट आरएसएस के संस्थापक, डॉ. हेडगेवार से हुई। इस अनुभव ने उन्हें अपना जीवन, जनसेवा के प्रति समर्पित करने की प्रेरणा दी। पंडित दीनदयाल ने नागपुर में आयोजित आरएसएस के 40 दिवसीय ग्रीष्मकालीन अवकाश शिविर में भाग लिया, जहां पर उन्होंने 1939 और 1942 में संघ शिक्षा (ओटीसी) का प्रशिक्षण प्राप्त किया। अपनी शिक्षा और आरएसएस की शिक्षा शाखा में द्वितीय वर्ष का प्रशिक्षण पूरा करने के उपरांत, पंडित दीनदयाल उपाध्याय संघ के पूर्णकालिक प्रचारक बन गए। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माध्यम से उन्होंने राजनीति में प्रवेश किया और भारतीय जन संघ के महासचिव और आगे चलकर अध्यक्ष बने। इस प्रकार, उनका जीवन, राजनीतिक चिंतन की अत्यंत गहन प्रक्रिया का प्रतिरूप था।

दीनदयाल उपाध्याय ने 'सम्राट चंद्रगुप्त' नामक ऐतिहासिक उपन्यास की रचना की, जोकि अपनी विशिष्ट साहित्यिक शैली के कारण युवावर्ग में अत्यंत लोकप्रिय हुआ। उनके द्वारा रचित दूसरा उपन्यास 'जगद्गुरु शंकराचार्य' था। पंडित दीनदयाल का उद्देश्य था कि युवावर्ग देश के गौरवशाली अतीत को जाने, उस पर गर्व करे और उस यश एवं कीर्ति को पुनः प्राप्त करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दे। उन्होंने 'अखंड भारत क्यों' की रचना राजनीति में प्रवेश करने के दौर में की।

पंडित दीनदयाल, गहन और मौलिक विचारक थे। राजनीति और अर्थशास्त्र के क्षेत्र में उनका दृष्टिकोण व्यावहारिक और जमीन से जुड़ा था। पंडित दीनदयाल ने भारत के लिए गांवों पर आधारित विकेन्द्रीकृत राजनीति और स्वावलंबी अर्थव्यवस्था की परिकल्पना की। वे आधुनिक प्रौद्योगिकी के पक्षधर थे, परंतु उसे देश की आवश्यकताओं के अनुरूप ढालकर आजमाना चाहते थे।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के लिए राष्ट्र हित सदा सर्वोपरि रहा। उनका एकात्म मानववाद, भारतीय तथा पश्चिमी विचारधारा के सामंजस्य पर आधारित है। उनके अनुसार, मनुष्य को समस्त व्यवस्थाओं का केंद्र होना चाहिए। जिस व्यवस्था में मनुष्य के शरीर और मन का साधारण विकास होता है, वहां आत्मा पूर्णता को प्राप्त नहीं करती और वह ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण करती है जो धूर्तता एवं स्वार्थ से भरा होता है और ऐसा व्यक्तित्व किसी भी दृष्टिकोण से पूर्ण नहीं होता। हमें ऐसे संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास पर बल देना होगा, जो कि विचार एवं चिंतन एवं संस्कृति की विविध धाराओं के सामंजस्य का उत्कृष्ट नमूना हो।

दीनदयाल उपाध्याय ने "राष्ट्र धर्म" नामक मासिक "पांचजन्य" नामक साप्ताहिक तथा "स्वदेश" नामक दैनिक पत्रिका का प्रकाशन भी प्रारंभ किया। वर्ष 1951 में, जब डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भारतीय जन संघ की स्थापना की, तो पंडित दीनदयाल इसकी उत्तर प्रदेश शाखा के प्रथम महासचिव बने। वे अखिल भारतीय महासचिव भी चुने गए।

वर्ष 1953 में डॉ. मुखर्जी के निधन के बाद संपूर्ण संगठन के विकास और इसे राष्ट्रव्यापी आंदोलन बनाने का दायित्व दीनदयाल उपाध्याय के युवा कंधों पर आ गया। उन्होंने 15 वर्षों तक पार्टी महासचिव का कार्यभार संभाला। उन्होंने आदर्शवाद की भावना से भरे समर्पित कार्यकर्ताओं की टीम तैयार की और पार्टी का वैधानिक ढांचा विकसित किया। उनके राजनय और दृष्टिदर्शन की शानदार सफलता, 1967 में आयोजित पार्टी के ऐतिहासिक अधिवेशन के रूप में देखने को मिली। पंडित दीनदयाल 1937 से 1968 तक भारत के राजनीति परिदृश्य में सक्रिय रहे। दीनदयाल उपाध्याय एक ट्रेन यात्रा के दौरान, 11 फरवरी, 1968 की भोर मुगलसराय रेलवे स्टेशन के पास मृत पाए गए।

राजनीति उनके लिए मात्र साधना थी, साध्य नहीं उनके लिए सफर थी, मंजिल नहीं। वे राजनीति को आध्यात्मिक स्वरूप में ढालना चाहते थे। वे भारत के वैभवशाली अतीत से अत्यंत प्रभावित थे और उनकी इच्छा थी कि देश के उज्वल भविष्य का निर्माण किया जाए। उनका स्वप्न था कि भारत का विकास एक संपन्न आधुनिक देश के रूप में हो। उन्होंने अपना पूरा जीवन, इन्हीं लक्ष्यों को प्राप्त करने के प्रति समर्पित रहते हुए बिताया।

डाक विभाग, दीनदयाल उपाध्याय पर स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:-

मूलपाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित

डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ : श्रीमती अलका शर्मा

विवरणिका/विरूपण



तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	1000 पैसा
Denomination	:	1000 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	308250
Stamps Printed	:	308250
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास हैं।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00